❁ 12 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] क्रोध। कहा जाता है जहाँ क्रोध है वहाँ पानी के मटके भी सूख जाते हैं। भारत का मटका जो हीरे-जवाहरों से भरा हुआ था, वह इस भूत के कारण खाली हो गया है। इन भूतों ने ही तुमको कंगाल बनाया है।

2] अन्तर्मुखता अर्थात् कुछ भी बोलो नहीं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह बाप बैठ शिक्षा देते हैं बच्चों को। और कुछ भी बोलने का इसमें नहीं। सिर्फ समझानी दी जाती है। गृहस्थ व्यवहार में ऐसे रहना है। यह है मनमनाभव।

3] यह 5 विकार अभी फुलफोर्स में हैं। ऐसे समय ही बाप आते हैं, जबकि विकार फुल फोर्स में हैं। यह आँखें बड़ी क्रिमिनल हैं। मुख भी क्रिमिनल ह। जोर से बोलने से मनुष्य तप जाता है और घर को भी तपा देते हैं। काम और क्रोध यह दोनों बड़े दुश्मन हैं।

4] देह-अभिमान में आने से दिल होती है भाकी पहनूं, यह करूँ। फिर कमाई सारी चट हो जाती है। क्रोध वाले का भी यह हाल है।

5] शरीर याद भी न आये तब ऊंच पद पा सकते हैं इसलिए 8 रत्न गाये जाते हैं। तुमको ज्ञान रत्न मिलते हैं रत्न बनने के लिए। कहते हैं भारत में 33 करोड़ देवतायें थे, परन्तु उनमें भी 8 रत्न पास विद् आनर होंगे। उनको ही प्राइज़ मिलेगी।

✺ योग-

1] मुझे याद करो, यह है पहली मुख्य प्वाइंट।

2] अब बाप समझाते हैं, मेरे को याद करो तो शान्ति हो जायेगी। और जन्म जन्मन्तर के विकर्म भी विनाश होंगे। बाकी कोई चीज़ है नहीं। कोई इतना बड़ा लिंग नहीं। आत्मा छोटी है, बाप भी छोटा है।

3] बाप कहते हैं देह सहित सब कुछ भूलो, अपने को आत्मा समझो, यह अवस्था रखने से ही तुम देवता बनेंगे।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– अन्तर्मुखी बनो अर्थात् चुप रहो, मुख से कुछ भी बोलो नहीं, हर कार्य शान्ति से करो, कभी भी अशान्ति नहीं फैलाओ।

2] क्रोधी मनुष्य खुद भी तपता है, दूसरों को भी तपाता है इसलिए अब इस भूत को अन्तर्मुखी बन निकालो।

3] कोई को दुःख नहीं देना चाहिए। लड़ाई आदि करना यह सब क्रोध है, सबसे बड़ा दुश्मन है काम। फिर दूसरा नम्बर है क्रोध।

4] याद करने वाले सदैव शान्ति में रहेंगे। अपने दिल से पूछना है– हमारे में भूत तो नहीं हैं? मोह का भी, लोभ का भी भूत होता है। लोक का भूत भी कम नहीं।

5] जब तक आत्मा **पवित्र** नहीं बनी है तब तक शान्तिधाम जा नहीं सकती।

6] हर एक अपने दिल से पूछे– कहाँ तक हमारे में सफाई है? कहाँ तक हम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करता हूँ? याद के बल से ही रावण पर विजय पानी है।

✺ सेवा-

1] कोई हिसाब निकाले तो निकल सकता है। फिर यह जो झाड़ है, उसमें भी यह लिख देंगे कि कल्प में इतने वर्ष, इतने मास, इतने दिन, इतने घण्टे, इतने सेकण्ड होते हैं। मनुष्य कहेंगे याह तो बिल्कुल एक्यूरेट बताते हैं। 84 जन्मों का हिसाब बताते हैं। तो कल्प की आयु क्यों नहीं बतायेंगे।